पानी रे पानी तेरा रंग कैसा

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा।' यह बात यमुना नदी के बारे में पूछी जाए तो कहा जाएगा कि बिल्कुल काला, प्रदूषित और भयानक बदबूदार। इसमें कहीं अतिश्योक्ति नहीं है। वजीराबाद से लेकर ओखला तक यमुना के किसी भी मुहाने पर खड़े हो जाएं उसका जल ऐसा ही नजर आएगा। बढ़ती आबादी, प्रदूषण और सरकारी इच्छाशक्ति के अभाव ने यमुना को गंदा नाला बना दिया है।

यमुना का यह वर्तमान स्वरूप अभी हाल ही की देन है। राजधानी में 1982 में हुए एशिया खेलों के बाद जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गई और रोजगार के लिए कारखाने खुलते गए। उसी अनुपात में यमुना में कालिमा और प्रदूषण बढ़ता गया। इससे पहले यमुना वैसे ही थी जैसे अन्य नदियां हैं। अगर बहुत पीछे जाएं तो मुगलो ने लालकिला इसीलिए बनवाया था कि वह यमुना नदी की गहराई' उसकी लहरों की अठखेलियों और उसके तटों के विस्तार से प्रभावित थे। लालकिले के पीछे आज भी यह दरवाजे देखे जा सकते हैं जहां से निकलकर मुगल शासक नौका विहार करते थे।

हैरानी की बात यह है कि अंग्रेजों ने अपने शासन काल में यमुना से किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की जैसी उन्होंने गंगा नदी के साथ की। अंग्रेजों ने न तो यमुना का बहाव मोड़ने की कोशिश की और न ही इससे कोई उपनदी निकालने की। राजधानी से निकलने वाली यमुना का रास्ता वही है जो बरसों पहले था। यह अलग बात है कि प्राकृतिक उपादेयतों के चलते यमुना अपने आप ही लालकिले के प्राचीर से दूर होती चली गई। आजादी के कुछ वर्ष पहले तक यह लालकिले की दीवार के पिछवाड़े से सटकर बहती थी। यमुना के पुराने और स्वस्थ रूप को देखने वाले लोग आज भी जब इसके बारे में बताते हैं तो सहज विश्वास नहीं होता कि यमुना इतनी साफ-सुथरी और गहराई लिए हुए थी। पुराने यमुना पुल के नीचे बरसों पुराना धोबीघाट है। इसके बारे में कहा जाता है कि जब मुगलों ने दिल्ली को राजधानी बनाया था, यह धोबीघाट तब वहां स्थापित हुआ था।

मुगलों के परिधान इसी घाट पर धुलते थे। बाद में जब अंग्रेजों ने लालकिला पर कब्जा कर उसे छावनी बना दिया तो अंग्रेज सैनिकों की वर्दियां इसी घाट पर धोई जाती थी। धुलाई का क्रम आज भी जारी है लेकिन कपड़ों की चमक और धोबियों के चेहरों की रौनक खत्म सी हो चली है। इस घाट पर बरसों से कपड़े धो रहे धोबी कृपाल सिंह अपने काले पड़ गए हाथ और पैरों को

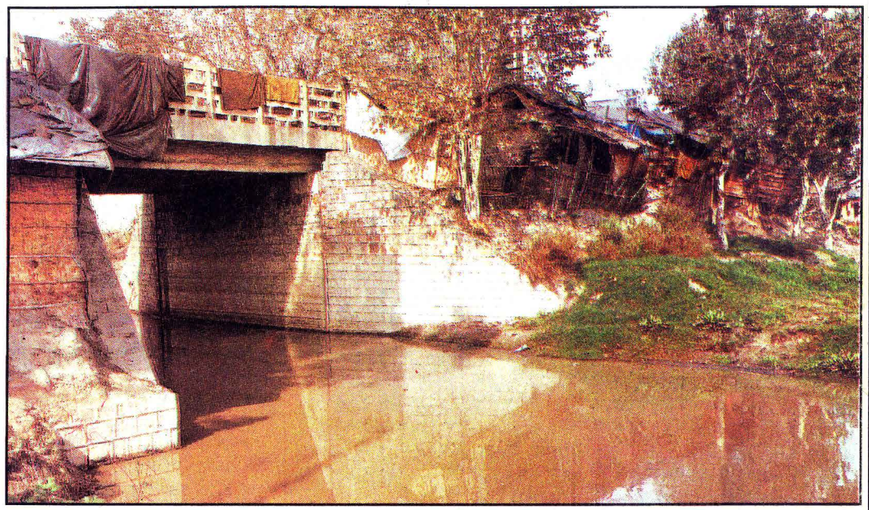

फोटो : आर.के. श्रीवास्तव

यमुना का यह वर्तमान स्वरूप अभी हाल ही की देन है। राजधानी में 1982 में हुए एशियाई खेलों के बाद जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गई और रोजगार के लिए कारखाने खुलते गए, उसी अनुपात में यमुना में कालिमा और प्रदूषण बढ़ता गया। इससे पहले यमुना वैसी ही थी जैसी अन्य नदियां हैं। सन् 1980 तक यमुना का पानी साफ-सुथरा माना जा सकता था उसके बाद इसके पानी के रंग व गंध में बदलाव आना शुरू हो गया

दिखलाते है जिसमें यदा-कदा खुजली होती रहती है। वह बताते है कि सन् 1980 तक यमुना का पानी साफ-सुथरा माना जा सकता था उसके बाद इसके पानी के रंग व गंध में बदलाव आना शुरू हो गया। आज हालात यह है कि इसके काले और गंधाते पानी में खड़े होकर कपड़े धोना बड़ी सजा नजर आती है लेकिन पैतृक व्यवसाय को छोड़ा नहीं जा सकता है। उनका कहना था कि यहां सालों पहले करीब दो किलोमीटर तक धोबी कपड़े धोते थे लेकिन अब गिने-चुने ही हैं। कई यह धंधा ही छोड़ चुके हैं या कई कपड़े धोना छोड़कर विभिन्न कालोनियों में कपड़े प्रेस करने लगे हैं। कृपाल के मुताबिक अधिकतर यहां टेण्ट वालों के कपड़े धुलते हैं क्योंकि यमुना में गंदगी की भरमार के चलते घरों के कपड़े धुलना बरसों से बंद हो चुके हैं। इस नदी के प्रदूषण ने दिल्ली का सामाजिक और धार्मिक विश्वास भी गड़बड़ा दिया है। इसके स्नान घाटों की रौनक बिल्कुल खत्म हो चुकी है और तीज त्योहारों पर लोग यहां महज औपचारिकता पूरी करते नजर आते हैं। वजीराबाद पुल से लेकर पुराना यमुना पुल तक यमुना के किनारे कई प्राचीन घाट हैं जहां दिल्लीवासी बरसों से धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान करते आए है। यहां के एक मल्लाह इतवारी लाल इन घाटों के पुराने सरोकारों के बारे में बताते हैं कि अस्सी के दशक से पहले यहां रोजाना-सुबह शाम खासी रौनक रहती थी। पुरानी दिल्ली के बांशिदे जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं इन घाटों पर रोजाना स्नान और पूजा पाठ करने आते थे। स्नानोत्सवों के दिनों तो बात ही कुछ और होती थी। कई-कई दिनों तक यहां मेला लगता था और नावों में सैर करने के लिए हुजूम के हुजूम उमड़ पड़ते थे।

उस दौरान यमुना के किनारे बने अखाड़े भी दिल्ली की जीवन्तता के प्रतीक थे। पहलवान कसरत करते थे और यमुना में घंटों तैराकी का आनंद लेते थे लेकिन अब ये बातें बीते जमाने की लगती हैं। नावें ही यमुना की छाती पर पसरी दिखाई देती है। यमुना के प्रदूषण ने दिल्लीवासियों को एक चीज से और महरूम कर दिया है वह है ताजा मछलियों का अभाव। मछलियां दिल्ली में अब भी बिकती हैं लेकिन पोखरों में पाली गई या निकटवर्ती राज्यों से लाई गई। पुरानी दिल्ली के बांशिदे बताते है कि पहले यमुना के पानी में जहां हाथ मारो वहां मछलियां उछलती नजर आती थी लेकिन अब तो गंदे पानी के कीड़े ही नजर आते है। पुरानी दिल्ली में रहने वाले और मछलियों के शौकीन छोटेलाल के अनुसार पहले वह और उनके कई साथी कई-कई दिनों तक यमुना के कछार में डेरा डाले रहते थे और इतनी मछलियां पकड़कर लाते थे कि पूरे मुहल्ले में बांटनी पड़ती थी। बरसात के दिनों में तो यह आलम होता था कि जब बाढ़ उतरती थी तो यहां वहां भर गए गड्ढों में लोग हाथों से ही मछलियां पकड़ लाते थे।

बीते दिनों की बाते बताते हैं छोटेलाल कि यमुना में उस दौरान रोहू, मल्ली, सिघांडा, गेंगरा और सोल मछलियों बहुतायत होती थी और वह सोचकर मछली पकड़ने जाते थे कि आज यह मछली पकड़नी है। जाल या कांटे में दूसरी मछली फंस जाती थी तो उसे फेंक दिया जाता था लेकिन अब तो बरसों से यमुना में मछलियां दिखाई नहीं दे रही। बरसात या बाढ़ के दिनों में नजर आ जाए तो अलग बात है। ■

हैं तो कई योजनाएं यमुना को बचाने की

यमुना की सफाई और उसके विकास को लेकर विशेषज्ञों से राय लेकर इस नदी की सफाई और उसके संपूर्ण विकास पर पूरी प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर चुकी है। फिलहाल यह अभी फाइलों में है लेकिन सरकारी सूत्रों के मुताबिक लोकसभा चुनाव के बाद इस पर अमल हो सकता है। वैसे सरकार इसके लिए टेंडर भी मंगा चुकी है। यह पूरी योजना लगभग तीन हजार करोड़ रुपये की है।

सरकारी की पहली योजना यमुना की सफाई कर उसके पानी को पीने योग्य बनाना और बेकार गुजरने वाले पानी को गर्मियों में इस्तेमाल करना है। राजधानी की आबादी फिलहाल एक करोड़ से ऊपर पहुंच गई है जिसे रोजाना 700 एमजीडी पानी की जरूरत है। सन् 2010 में दिल्ली की आबादी लगभग दो करोड़ हो जाएगी तब उसे 1760 एमजीडी पानी की जरूरत होगी। फिलहाल दिल्ली में पानी आपूर्ति के दो ही स्रोत हैं यमुना और गंगा नदी। दिल्ली का अधिकतर क्षेत्रों में भूमिगत पानी खारा या दूषित है जिसके चलते उसका उपयोग नहीं हो पा रहा। दिल्ली को गंगा से 200 एमजीडी ही पानी मिल पाता है जो यमुना पार तथा दक्षिण दिल्ली के कुछ इलाकों में खप जाता है यानी कुल मिलाकर दिल्ली के लिए यमुना सबसे महत्वपूर्ण जल स्रोत है। लेकिन इसकी हालत यह है कि गर्मियों में वजीराबाद और चन्द्रावल जल शोधक संयंत्रों को ही यमुना से पानी नहीं मिल पाता और हैदरपुर संयंत्र को हरियाणा नहर से मिलने वाला पानी भी जब तब रोक दिया जाता है। यानी सारा दारोमदार यमुना पर ही आकर टिक जाता है। राजधानी के योजनाकार आर.जी. गुप्ता के मुताबिक यमुना में ही इतनी क्षमता है कि यह दिल्ली को पानीमय कर सकती है। उन्होंने बताया कि यमुना का 80 प्रतिशत जल बेकार बह जाता है, अगर इसे ही रोक लिया जाए तो सारी परेशानी खत्म हो सकती है। इसके लिए यमुना में जगह-जगह तालाब बनाने होंगे जिनमें बेकार पानी इकट्ठा हो जाएगा जिसे गर्मी में प्रयोग में लाया जा सकता है। श्री गुप्ता जो दिल्ली सरकार की इस योजना के सलाहकार भी हैं, कहते है कि यमुना की सफाई भी बहुत जरूरी है इसके लिए यमुना के आसपास का पर्यावरण सुधारना आवश्यक तो है, साथ ही तीन तरीकों से यमुना की सफाई हो सकती है। इनमें पहला यह कि यमुना में गिरने वाले नालों के मुहाने पर 'छलनी' लगा दी जाए ताकि गंदा पानी न गिरे, दूसरा यमुना के समानान्तर एक बड़ा नाला बना दिया जाए जिसमें सब नाले आकर गिरे और दिल्ली की सीमा पर इस नाले के पानी के जलशोधन संयंत्र से सफाई कर दी जाए ताकि समीपवर्ती राज्य को किसी प्रकार की आपत्ति न हो। तीसरा तरीका 'वैट लैण्ड तकनीक' है, यानी यमुना की सतह पर विशेष प्रकार के फूल उगा दिए जाएं जो उसके प्रदूषण को आत्मसात कर सकें। श्री गुप्ता के मुताबिक पहली व तीसरी तकनीक महंगी है। समानान्तर नाले की योजना से

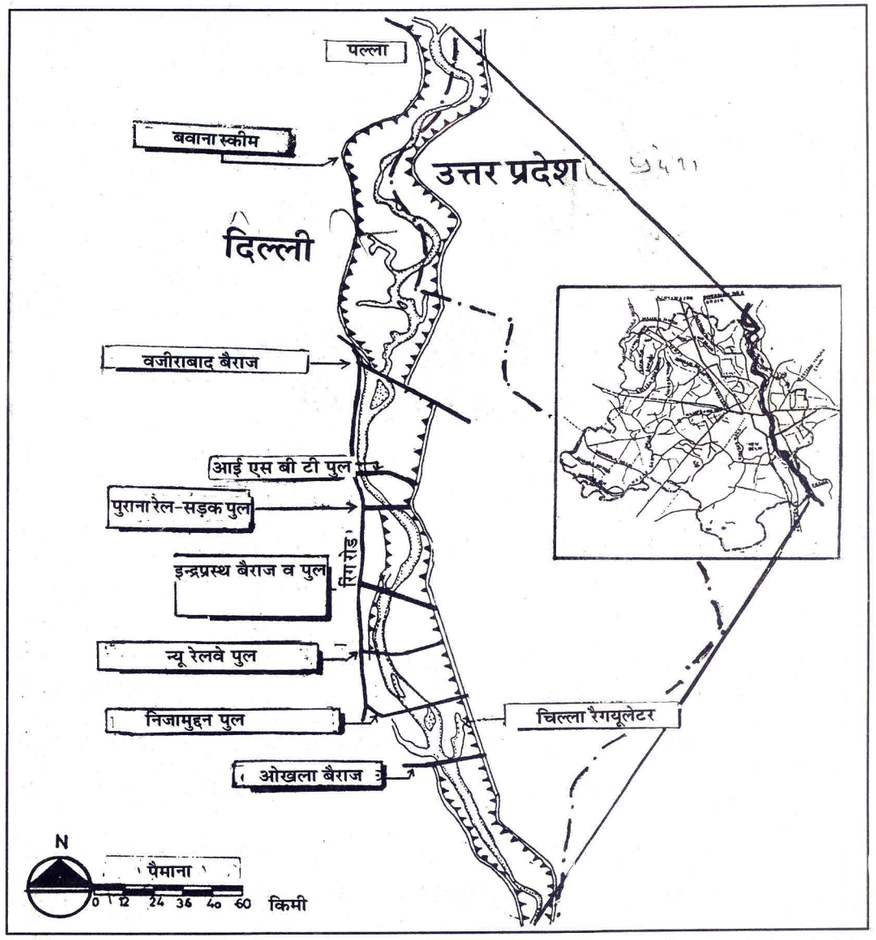

ही यमुना को आसानी से प्रदूषण रहित किया जा सकता है। वैसे दिल्ली सरकार इसी योजना पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रही है। दूसरी महतवपूर्ण योजना है-यमुना सरकार को 'यमुना के सम्पूर्ण विकास की। जापान की एक 'सपोफ' टीम ने सरकार को 'यमुना एक्शन प्लान' बनाकर दिया है। इस टीम ने अन्य 14 शहरों के लिए भी इसी प्रकार की योजना बनाकर दी है। दिल्ली की यमुना के लिए उसके कुछ सुझाव हैं-जैसे कम लागत की सीवर सफाई व्यवस्था, विद्युत शवदाह गृह, यमुना फ्रंट विकास, स्नान घाट, वृक्षारोपण व भूसंरक्षण, संचार माध्यमों के साथ जन सहयोग व जागरुकता अभियान व तकनीकी सहायता एवं प्रशिक्षण। इस योजना को केंद्र सरकार ने अप्रैल 1993 में पारित कर दिल्ली के लिए 20 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है। इसके अलावा आठवीं पंचवर्षीय योजना से 280 करोड़ रुपये भी मुहैया कराए गए हैं। इसी योजना के तहत यमुना की लगभग 80 वर्ग किलोमीटर भूमि के विकास का संपूर्ण प्रावधान रखा गया है, जिसमें से मनोरंजन स्थलों के लिए 64 वर्ग किलोमीटर भूमि, व्यावसायिक उपयोग के लिए 4.8 वर्ग किलोमीटर, रिहाइश के लिए 2.4, निजी व अर्थ निजी संस्थानों के लिए 3.2, सरकारी कार्यालयों के लिए 3.2 तथा अन्य विकास योजनाओं के लिए 2.4 वर्ग किलोमीटर भूमि का बंटवारा किया गया है। इसके अलावा 226 परिवारों के लिए 52 धोबी घाटों का प्रावधान भी इसमें है। इसी योजना में नौकायन की संभावनाएं भी बताई गई हैं। फिलहाल प्रदूषित और दम तोड़ती यमुना के लिए कई योजनाएं बन चुकी हैं, बस जरूरत है तो उसे लागू करने की जिसमें सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति जरूरी है। यमुना की जो हालत है उसको देखते हुए इसका संपूर्ण विकास आवश्यक है जिसे तुरंत किया जाना जरूरी है।

योजनाकार श्री गुप्ता के मुताबिक यह विकास योजना शीघ्र लागू न की गई तो कुछेक सालों में यमुना की वो हालत हो जाएगी कि सारी सरकारी योजनाएं बह सकती हैं जिसका नतीजा यह निकलेगा कि आने वाली पीढ़ी सिर्फ नक्शा देखकर ही संतुष्ट होगी कि दिल्ली में यमुना कभी बहती थी। ■